भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 06 | उदयपुर शुक्रवार 01 अप्रेल 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

गौरन में कौनसी हमारी गणगौर है ?

– डॉ. महेन्द्र भानावत –

सुहाग की कामना के लिए गणगौर पूजन :

सुख, सुहाग एवं समृद्धि की कामना के लिए गणगौर का त्यौहार मनाया जाता है। उदयपुर में आजादी पूर्व महाराणा की भव्य सवारी निकलती थी। राजपरिवार के साथ विभिन्न समाजों की गणगौरें पीछोला के किनारे त्रिपोलिया पर पहुंचती थी। त्रिपोलिया वाला घाट आगे जाकर गणगौर घाट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घाट के किनारे महिलाएं अपने-अपने समाज की गणगौरों की पूजा करती हैं और उनके सामने बड़ा ही मनमोहक घूमर नृत्य करती हैं। महाराणा सज्जनसिंह ने इस अवसर पर पहली बार नाव की सवारी प्रारंभ की जिसका जिक्र महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले घूमर गीतों में मिलता है- 'हेली नाव री असवारी सज्जन राण आवे छै' अर्थात हे सखि! नाव की सवारी किए राणा सज्जनसिंह आ रहे हैं।

पिछले कुछ वर्षों से यह उत्सव मेवाड़ महोत्सव के नाम से प्रारंभ किया गया। इसमें विभिन्न समाजों की गणगौरों में से प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाली श्रेष्ठ गणगौर को पुरस्कृत किया जाता है। गणगौर और ईसर काठ यानी लकड़ी के बनाये जाते हैं। इनको बनाने वाले खैरादी अथवा सुथार जाति के कलाकार होते हैं। चित्तौड़ जिले के बस्सी गांव के खैरादी बड़ी कलात्मक गणगौर और ईसर बनाने में दक्ष हैं। यहां के काष्ठशिल्पी मांगीलाल ने बताया कि बस्सी में यह परम्परा पिछले दो हजार वर्ष से चली आ रही है। गणगौर और ईसर लकड़ी में विभिन्न अंगों को उभारकर बनाने के साथ-साथ सादे रूप में भी बनाये जाते हैं।

होली से गणगौर का जुड़ाव :

होली के दूसरे दिन बालिकाएं होली की राख के पिण्ड बनाकर अपने गीत-मंत्रों से उनकी पूजा करती हैं। सातवें दिन से ही लड़कियों को यह लगा कि पिण्डों में प्राण पड़ने शुरू हो गए हैं। घरों में धन-धान्य, सुख-आनंद की बढ़ोतरी होनी प्रारम्भ हो गई। पन्द्रहवें दिन पूजा करने वाली एक षोडशी को स्वप्न दिया, 'तुम मुझे एक काठ-प्रतिमा बनाकर उसे अच्छे वस्त्र-आभूषणों से अलंकृत कर देना। मैं गौरा के रूप में उसी में जीवित हो उठूंगी।'

गणगौर के लिए 32 फर, 16 मीठे तथा 16 चरके बनाये जाते हैं जो उसकी पूजा थाली में रखे जाते हैं। गणगौर स्थान पर जब महिलाएं पूजा करने जाती हैं तब सौलह तो गणगौर के चढ़ा देती हैं, शेष सौलह का एक-दूसरी आपस में अदला-बदली करती हैं। पूजा की थाली में मेहंदी, लच्छा, कंकू के साथ-साथ हल्दी मिले गेहूं-आटे के गणगौर माता के आभूषण बड़े कलात्मक और विशेष दक्षता-कारीगरी लिए होते हैं।

जेवर आटे के होते हैं परन्तु इनका रूप-नक्श भी असली जेवरों से मिलता-जुलता ही होता है। बोर बनायेंगे तो उसके नाका करेंगे। उस नाके में लच्छा डालेंगे। बोर के ऊपर आटे की बारीक-बारीक बुंदकियां लगाई जायेंगी। रखड़ी बनेगी तो वैसी की वैसी रखड़ी बनाई जायेगी। तेड़िया, बजंटी, बींटी, चूड़ी, कड़े, नेवरियां, आइलें, पाइलें, टणके सब आभूषण बनाये जायेंगे। पायलों के नीचे आटे की ही छोटी-छोटी घूघरियां बनाई जायेंगी और घास की पतली तिली से उन पर बेलें तथा दूसरी डिजाइनें निकाली जायेंगी।

उदयपुर के पीछोला तालाब का गणगौर घाट पहले राजघाट के नाम से जाना जाता था परन्तु इस घाट पर गणगौर बिठाई जाने के कारण इसका यह नाम पड़ गया। यह घाट न केवल राजगणगौर अपितु सभी जाति की गणगौरों के लिए है। सबके अलग-अलग स्थान नियत हैं। महाराणा की ओर से प्रत्येक गणगौर को प्रसाद तथा रूपया-नारियल चढ़ाया जाता। अम्बामाता के नाम की भी एक गणगौर निकलती जो सत्तापोल तक लाई जाती। महाराणा नाव की सवारी से इस गणगौर के दरसण करते और दस्तूर माफिक भेंट-पूजा चढ़वाते।

माटी की गणगौर :

काठ की गणगौर के साथ-साथ महलों में माटी की बनी गणगौर भी पूजी जाती। माटी की गणगौर-ईसर की जुड़वा मूर्ति मोती चौहट्टे के चतारे के वहां से लाई जाती। पानी में यही मूर्ति पधराई जाती। इसके बाद एक मूर्ति और मंगवाई जाती जिसकी धींगा गणगौर तक पूजा की जाती और अन्त में उसे भी पानी में विसर्जित कर दी जाती। मोती चौहट्टा का वह चतारा-घर आज भी अपने पारम्परिक रूप में गणगौर की माटी की मूर्तियां बनाता है जहां से गणगौर-महिलायें इन्हें खरीद कर ले जाती हैं।

गणगौर के दिनों में महाराणी साहिबा भी गणगौर की ही तरह पोशाक धारण करतीं। सारी पोशाक गणगौर, घूमर तथा नाव की सवारी के विविध चितराम लिए होती। प्रत्येक चित्र पर जरी का बहुमूल्य काम करवाया जाता। विविध रंगी गणगौर की ऐसी बेशकीमती कसूमल, हरी, पीली, गुलाबी तथा भूपालशाही साड़ियां उदयपुर के गोवर्धनलालजी पटवा के मार्फत मोतीवाला तथा चौकीवाला बोहरों द्वारा बनवाई जातीं।

धींगा गणगौर :

वैसाख कृष्णा तृतीया को गणगौर का एक और त्यौहार 'धींगा गणगौर' के नाम से जाना जाता है। इसे उदयपुर के महाराणा राजसिंह (प्रथम) ने अपनी छोटी रानी को राजी रखने के लिए प्रारम्भ किया। धींगाई जबर्दस्ती को कहते हैं। रानी की जिद्द-जबर्दस्ती से प्रारम्भ करने के कारण ही इसका नाम धींगा गणगौर पड़ा। राजस्थान के विविध अंचलों में यह त्यौहार भिन्न-भिन्न रूप से मनाया जाता है। कहीं सवारी का आयोजन होता है। कहीं मेले आयोजित होते हैं तो कहीं-कहीं महिलाओं द्वारा इस दिन विचित्र प्रकार के स्वांग भी धारण किये जाते हैं। इसके पीछे लोककथाएं भी कुछ प्रचलित हैं।

गणगौर का अपहरण :

पूर्व में अपने राज्य के विस्तार के लिए ठिकानेदार आपस में एक-दूसरे से ईर्ष्या, द्वन्द्व और मनमुटाव रखते थे। किसी बात को लेकर जब कोई जागीरदार किसी से नाराज हो जाता तो अपना गुस्सा उस ठिकाने की गणगौर का अपहरण कर शांत करता। मेवाड़ के ठिकानों और जागीरदारों ने भी गणगौर के अवसर का लाभ उठाते हुए अन्य ठिकानों में मनाये जा रहे गणगौर उत्सव में दखल देते हुए भरे दरबार से वहां की गणगौर को उठा लाकर न केवल बहादुरी का परिचय दिया अपितु अपने ठिकाने का नाम भी जगजाहिर किया।

उदयपुर का बेदला ठिकाना प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। लगभग 400 वर्ष पूर्व यहां के राव सरदार भाले की नोक पर जो गणगौर उठा लाए उसके हाथ नहीं है। केवल धड़ रूप में यह गणगौर देखी गई। ऐसी ही एक गणगौर गोगुन्दा का लालसिंह झाला मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह की चुनौती स्वीकार कर कोटा दरबार की गणगौर उड़ा लाया। ऐसी ही एक गणगौर भीण्डर नामक ठिकाने वाले गुजरात के अहमदाबाद से उठाकर लाए।

पुलिस पहरे में करोड़ों की गणगौर :

बीकानेर में ढड्ढ़ों के चौक में बैठी गणगौर का मेला अनूठे रूप में दर्शनीय है। सेठ उदयमल ढड्ढ़ा द्वारा यह गणगौर प्रारंभ की गई थी। जब उनके कोई संतान नहीं हुई तो उन्होंने मनौती ली। चैत्र शुक्ला तृतीया को गणगौर के दिन ही उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इस गणगौर के साथ पुत्र के रूप में भाइया की भी पूजा प्रारंभ हुई।

बीकानेर की गणगौर और भाइया

यह गणगौर नख से सिर तक सोने, हीरे, पन्ने, माणक, मोती जैसे कीमती जवाहरात से जड़ी हुई है। आभूषणों में सोने में जड़ाऊ बोर, मोती लगा टीका, बोर के नीचे खांचा जोड़ी, नाक में हीरे की मोती जड़ाऊ नथ, गले में हीरा पन्ना माणक मोती वाला कठसरी गलपटिया, टेवटा, चंदन हार, हाथ में मातियों की बंगड़ी, गजरे, चूड़ियां और मटरिया, अंगुलियों में छल्ला तथा बींटा, कमर में जड़ाऊ कन्दोरे, पांव में बारह गहनों का सेट। इसी तरह भाइया के आभूषणों में मोतियों की टोपी, कानों में ऊपर भंवरिये तथा नीचे मोती लगे लोंग, गले में पन्ना का कंठा, हाथों तथा पांवों में कड़े शोभित हैं। यह गणगौर पुलिस के कड़े पहरे में प्रदर्शित की जाती है।

फूल-पत्तों की गणगौर :

राजस्थान में जहां राजपरिवारों और विभिन्न ठिकानों की गणगौरें बहुमूल्य हीरे जवाहरात से लकदक होती हैं वहीं आदिवासियों तथा अन्य जातियों में ऐसी गणगौरें मिलेंगी जिनका पूरा श्रंगार ही फूल-पत्तियों और जंगली फलों का है। ऐसी गणगौर में गरासिया जाति का सबसे बड़ा मेला वैशाख कृष्णा पंचमी को आबू रोड़ के पास सियावा गांव में भरता है। यह मेला पिछले 250 वर्षों से भरता आ रहा है।

फूल-पत्तियों से सजी गणगौर

– शेष पृष्ठ सात पर

भंवर म्हाने पूजण दो गणगौर

- डॉ. तुक्तक भानावत -

ऋतुराज बसन्त के आगमन के पश्चात त्यौहारों का प्राय: तांता सा लग जाता है। जन-जीवन में आनंद, उत्साह एवं उल्लास उमड़ पड़ता है।

रंगीले चंग की चलत, गैर की 'धन्त्यो पतड़', 'डांडिया' और 'गींदड़' के 'भाई-भाई रे गैर्‌या', औरतों के 'कोई हाथ कांगण माथे बोर ए रायां की होली', बालिकाओं का 'लूर' तथा 'फागण रा दन चार होली वेगी आवजे', रंग की पिचकारियों, गुलाल की गुलालों, पटाखों की पटपट तथा फूलझड़ियों की सर-सर सूं के साथ फाल्गुन शुक्ला तृतीया को सौभाग्यकांक्षिणियों की सुभाग, सुन्दरियों का सिन्दूर, साधिकाओं की साधना, सतियों के सतीत्व की प्रतीक, छोटी बालिकाओं तथा कुंवारी कन्याओं की पूजा, कुमारिकाओं की श्रेष्ठ पति प्राप्ति की आशा और सधवाओं के पति चिरायु की विश्वास बन कर गणगौर आती है जिसे राजस्थानी और मालवी गणगौरें बड़े उत्साह, उमंग और निष्ठा के साथ मर्यादापूर्वक मनाती हैं। पूजा-पाठ करती हैं और नृत्य-गीतों के साथ अपना मनोरंजन करती हैं।

होलिका दहन के आठवें दिन शीतला पूजन के बाद टीलों के बालू, मिट्‌टी तथा कुम्भकार के वहां से चिकनी मिट्‌टी लाकर ईसर, कानी, मालण आदि की प्रतिमाएं बनाई जाती हैं।

जवारों के रूप में जौ बो दिये जाते हैं तथा चैत्र बदी एकम से चैत्र शुक्ला तृतीया तक गौर की पूजा की जाती है। इस अवसर पर राजस्थान में जगह-जगह एकम से बीज तक मेले भी लगते हैं।

कन्याएं ईसर (महादेव) और गौरी (पार्वती) से मनवान्छित वर प्राप्त करने की कामना स्वरूप प्रात: उठते ही अपनी-अपनी टोलियां बना कर वन में जाती हैं और दुर्बा लोठे में फूल सजाकर गौरी-पूजा तथा वर-कामना के विविध गीत गाती हुई लौटती हैं और संध्या को महिलाएं घूमर नृत्य के साथ कई तरह के गीत गाती हैं। यथा-

(1) काली चूंदड़ ऊपर बालमा बोत राजी
(2) काले रंग चूंदड़ी लादे रे बालमवा
(3) बदीला म्हारे गजरो लादो सा
(4) लाईदो रसिया जोधपुरी
(5) म्हारी घूमर छै नखराली ए मां
(6) भरलावो पाणी सागर रो
(7) रगड़-रगड़ पग धोवती ओ रसिया

हर्ष, आनंद, उल्लास, विनोद तथा प्रेम के रूप में यह त्यौहार मनाती हैं। अपनी सखी-सहेलियों को चाहे सवा मण रोली भी क्यों न बांटनी पड़े वह तो ईसर जैसे वर को ही अपना भरतार बनायेगी, जैसी बात भी गीतों के रूप में स्वत: कंठों से निकल पड़ती है-

फोटो : राजेन्द्र हिलोरिया

हां ओ बाप जी
इसर वर ने भलाई वरां
सवामण रोली
सैया ने बांटस्यां।
इस त्यौहार पर चूड़ा और चूनड़ी पहनना अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है। सधवा स्त्रियां-

यां ही रहो उगन्ता सूरज यांही रहो जी
थाने रस्ते में होसी गणगौर

फोटो : राजेन्द्र हिलोरिया

म्हारा हंजा मारू यां ही रहो जी।

कहकर अपने प्रियतम से उनके साथ रहने की चाह करती हैं और गौर का विंदोरा निकालती हैं।

गणगौर के दिन संध्या को औरतें अच्छे वस्त्राभूषणों से सज-धज कर गीत गाती हुई समूह रूप में रावले (महल) में रानीजी के दर्शन करने जाती हैं। रानीजी के कीमती वस्त्राभूषण देख कर जब वे अपने घर लौटती हैं तो अपने प्रियतम से उसी अनुरूप वस्त्र एवं आभूषण लाने की मांग बात और बोली बिना, गीत रूप में कितनी स्वाभाविक ढंग से करती हैं-

'लाईदो रसिया जोधपुरी' में माथा ने मेमद, रखड़ी रे रतन, काना रे झालज, जूटणा रे झोल, मुखड़ा रे बेसर, टीलड़ी रे जरद, हिवड़ा रे हांस, तमण्या रे पाट, बायां रे चूड़लो, अंगिया रे झरद, हाथां रे हथफूल, गजरा रे मजरा, कड़्यां रे कसूमल, केसर्‌या रे कोर, पगल्या रे पायल, घूमरा रे घमच, अंगोठा रे अणवट तथा बिछिया रे डांडी दिलाने की विनती करती है।

गणगौर के दिन प्रियतमा अपने प्रियतम से कह बैठती है-

आज तो रंगीली गणगौर हो
मेवाड़ा राजा
आज तो रसीली गणगौर हो
चित्तौड़ा राजा,
आज तो.....
कसूमल पाग, केसर बीन बागा,
तुर्रा री छवि न्यारी
हो मेवाड़ा राजा, हो चित्तौड़ा राजा
आज तो.....

इसलिए मुझे भी गणगौर खेलने जाने की आज्ञा दीजिये कारण कि मेरी सभी सहेलियां बाहर खड़ी मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं।

खेलण दो गणगौर भंवर म्हाने
खेलण दो गणगौर
होजी म्हारे गणगौरी रा दन च्यार
होजी मारू खेलण दो गणगौर
होजी म्हारी सगीय नणद रा वीर
गाढ़ा मारू खेलण दो गणगौर
होजी म्हाने गणगौर्‌यां रो चाव
साजन म्हाने पूजण दो गणगौर।

अपनी सखी-सहेलियों के साथ ओढ़-पहिन कर तैयार बनी बैठी बादल महल, हरिया बाग और मोती महल में गणगौर रमने जाने के लिए प्रियतम की आज्ञा की इंतजार कर ही रही थी और प्रियतम आज्ञा का इशारा कर बाहर चला गया।

इसलिए वह घड़ी, हर घड़ी, पल-प्रतिपल अपने घर-आंगन में ऊपर-नीचे चढ़ती प्राण प्यारे की बाट जोहती है। प्रियतम के नहीं आने पर वह इस आशा से गाना प्रारंभ कर देती है कि जहां भी उसके प्रियतम होंगे, उसका गीत सुनकर घर चले आयेंगे और उसे गणगौर खेलने जाने की स्वीकृति प्रदान करेंगे।

गणगौर के अवसर पर स्त्रियां घूमर नृत्य करती हैं। यह घूमर उदयपुर तथा बूंदी की बड़ी कलापूर्ण होती है। घूमर नृत्य में कई गीत प्रचलित हैं जिनमें से कुछ प्रतिनिधि प्रसिद्ध गीतों के बोल इस प्रकार हैं-

(1)
लालर लेदो रे नोखीला म्हारो जीव तरसे
लालर लेदो रे।
रखड़ी बांधूं तो म्हारे कालो डोरो आठी को
बिंदली बिना म्हारो जीव तरसे
लालर लेदो रे।
लेरियो ओढूं तो म्हारो मन नहीं भावे
सालूड़ा बिना म्हारो जीव तरसे
लालर लेदो रे.....

(2)
सागर पाणी कैसे लाऊंसा
नजर लग जाय।
म्हारी पातली कमर
ढोला लुल़-लुल़ जाय।

(3)
म्हारी घूमर छै नखराली ए मां
गौरी घूमर रमवा म्हैं जास्यूं
म्हारी रणक झणक पायल बाजे ए मां
म्हारे आलीजी री बोली मोत्यां तोली ए मां

मीरा महाविद्यालय में मांडणा प्रतियोगिता

राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय में स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य तथा आजादी के अमृत महोत्सव के तहत चित्रकला परिषद्, चित्रकला विभाग द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रभारी डॉ. रामसिंह भाटी ने बताया इसमें 50 से अधिक छात्राओं ने भागीदारी निभाई।

महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. शशि सांचीहर ने बताया कि छात्राओं को भित्ति चित्रण और मांडना जैसी परम्परागत कला से जोड़े रखने के साथ उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह प्रतियोगिता आयोजित की गई ताकि अधिक से अधिक छात्राएं इससे जुड़ें और परम्परागत कला को सीख सके। आयोजन से जुड़े डॉ. दीपक भारद्वाज ने बताया कि इस तरह के कार्यक्रम विभाग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाते हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. मनीषा चौबीसा, डॉ. कहानी भानावत, पुष्पा मीणा, डॉ. दिव्या हिरण, डॉ. वन्दना मेघवाल, विकास कुमार तथा जया कुंपावत का विशेष योगदान रहा।

- राकेश शर्मा 'राजदीप'

मानसिक रोगी महिलाओं को वस्त्र वितरित

लखनऊ में 23 मार्च को वरिष्ठ पत्रकार साहित्यकार श्री शिवसिंह सरोज की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी। आयोजन श्री शिवसिंह सरोज स्मारक समिति और कृष्णप्रताप विद्याविंदु लोकहित न्यास की ओर से किया गया। इस अवसर पर मानसिक रोगी और संरक्षण गृह में निवास करने वाली महिलाओं को वस्त्र और जलपान हेतु पैकेट वितरित किया गया। दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों में डॉ. करुणा पांडे, डॉ. संगीता शुक्ला, डॉ. सत्येंद्रकुमार सिंह, श्रीमती रमासिंह और प्रेम निवास की निष्ठावान बहनें उपस्थित थे। देश की शांति और सुख समृद्धि के लिए प्रार्थना की गई। इसी अवसर पर श्री कृष्णप्रताप सिंह को श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया।

- डॉ. विद्याविंदुसिंह

स्मृतियों के शिखर (140) : डॉ. महेन्द्र भानावत

धर्मजीवी संस्कारों के रहते वकालात नहीं कर पाये चपलोत साहब

उदयपुर के रोशनलालजी चपलोत जिन्हें हम वकील साहब कहते, पर कभी उन्हें वकालात करते देखा, सुना नहीं। बीकानेर अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के बोर्डिंग में सन् 1954 से 1958 तक रहकर मैंने वहीं से बी.ए. पास किया।

ठठेरा बाजार में जहां यह संस्था है वहीं एक परिसर में हम छात्र तथा दूसरे में वकील साहब अपने परिवार सहित रहे। वे बहुत ही सरल चित्त के साधुमना व्यक्ति थे। वे पक्के धर्मजीवी, साधारण रहन-सहनवाले, अल्प मितव्ययी तथा अल्पभाषी थे। वे साल भर हमारे पास रहे पर कुल जमा दो बार ही उन्हें तनिक मुस्कराते देखा।

उदयपुर आकर जब 29 मार्च 1976 को उनके निवास पर मेरी भेंट हुई तब उनसे बातचीत कर पता लगा कि उन्होंने सन् 1942 में इन्दौर से एलएलबी की परीक्षा उत्तीर्ण की फिर ग्यारह वर्ष उदयपुर में वकालात की किन्तु नहीं चली सो पुनः बीकानेर बुला लिये गये। वकालात के लिए जो सामान्य प्राथमिक व्यक्तित्व चाहिये वह भी उनमें विकसित नहीं हो पाया। संत सदैव ही सत्मार्गी होते हैं। वे सत्पथ के सारथी होकर अन्त तक सन्मार्गी, सद्मार्गी बने रहते हैं। कोई भी लाभ-लोभ उन्हें जरा भी विचलित नहीं कर सकता। उस परिभाषा में चपलोत साहब तनिक भी चपलगपल नहीं हो पाये।

वकील साहब की विगत यह रही कि संवत् 1967 सावण वदी बीज को उनका जन्म हुआ। वे प्रारम्भ में छोटीसादड़ी के गोदावत जैन आश्रम में चले गये जहां पांच वर्ष पढ़े। पिता अजीतसिंहजी के धार्मिक संस्कारों में पले-बढ़े चपलोत साहब को वहां भी धार्मिक वातावरण मिला। यहीं 1953-54 में मैंने भी हाईस्कूल की परीक्षा पास की तब यह आश्रम नहीं होकर गुरुकुल हो गया था।

बीकानेर के अगरचन्द भैरोंदान सेठिया बोर्डिंग में तब मेरे जन्म गांव कानोड़ के पं. पूर्णचन्द दक थे। उन्होंने अजीतसिंहजी को चिट्ठी लिखी कि अपने पुत्र को यहां भेजदें सो उन्होंने चपलोत साहब को वहां भेज दिया।

यहां पं. शोभाचन्द भारिल्ल, पं. रमानाथ, पं. घेवरचन्द बांठिया 'वीरपुत्र', पं. श्यामलाल ओझा जैसे दिग्गज धर्म धुरंधरों का सान्निध्य ले चपलोत साहब ने तीन वर्ष में न्यायतीर्थ की परीक्षा पास की। उसके बाद उन्होंने यहीं नौकरी करली। तब सेठियाजी का नाइट कॉलेज चलता था। उसमें प्रिंसिपल एस. के. सरकार और जे. सी. घोष थे। ये बंगाली थे जो कलकत्ता से बुलाकर वहां रहे। यहीं शम्भुदयाल सक्सेना हिन्दी पढ़ाते थे।

बाद में रामपुरिया इन्टर कॉलेज खुला तो सरकार साहब और घोष साहब वहां प्रिंसिपल, वाइस प्रिंसिपल बने। मैंने इन्टर रामपुरिया कॉलेज से किया तब ये दोनों बहनोई-साला वहीं थे। सरकार साहब ऊंचे कद के बंगाली धोती कुरते में बड़ा प्रभावी व्यक्तित्व लिये थे। उनकी बड़ी मीठी बंगाली जबान हमारे पल्ले तो नहीं पड़ती पर जब वे अंग्रेजी पढ़ाते तो सभी छात्र दत्तचित्त हो सुनते रहते। मुझे लगता, ये पढ़ाते ही रहें।

ऐसे आदर्श ज्ञानवान प्रज्ञापयोधि गुरुजन के बाद वैसे गुरुजन मेरे पढ़ने में तो क्या, देखने में भी नहीं आये। तब सक्सेना साहब का पास ही में 'नवयुग ग्रन्थ कुटीर' नाम से पुस्तक सदन था जहां मैं भी यदाकदा किताबें खरीददारी करने पहुंच जाता तो नमस्कार जरूर कर लेता पर मुलाकात कभी नहीं हुई। उनका तब एक 'वल्कल' नामक एकांकी हमारे संग्रह में था जिस कारण सक्सेनाजी के दर्शन कर मैं मन-ही-मन अपने को धनभाग समझता। हां, उनके सुपुत्र शेखरजी से मेरा अच्छा परिचय था। वे बड़े हंसमुख तथा मुस्कान भाषी सहृदय व्यक्तित्व लिए चश्माधारी इन्सान थे।

सेठिया संस्थान में काम करते चपलोत साहब ने प्राइवेट मेट्रिक, इन्टर तथा बी.ए. पास की। उन्हीं दिनों अजमेर में शतावधानी मुनिश्री रत्नचन्दजी महाराज का चातुर्मास था सो बाबूजी भैरोंदानजी ने इन्हें वहां अध्ययन करने भेजना चाहा पर वे नहीं जा सके। पं. पूर्णचन्दजी के साथ दो घण्टे प्रतिदिन बाबूजी के निवास ऊन प्रेस जाकर दो-दो सामयिक करते जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के 8 भाग तैयार किये फिर बाबूजी ने उन्हें इन्दौर एलएलबी करने भेजा।

जब मैं बीकानेर था तब मैंने भी पं. घेवरचन्दजी तथा पं. श्यामलालजी से धार्मिक अध्ययन कर पाथर्डी से जैन सिद्धान्त प्रभाकर की परीक्षा पास कर सिल्वर मेडल प्राप्त किया। वहीं पास ही कोटड़ी में प्रातः साधु-सन्तजी के दर्शनार्थ जाते। पं. घेवरचन्दजी ने अनेक सूत्रों का प्राकृत से हिन्दी में अनुवाद किया जिनका प्रकाशन सेठियाजी ने किया। बाबूजी भैरोंदानजी से कभी-कभी हम मिलने जाते। वे अपने जीवन व्यवहार में दिव्यात्मा ही थे। कभी अपना पांव छूने नहीं देते। हमारी कुशलक्षेम पूछकर शुभमंगल भावना प्रकट करते। समाज में भी उन्हें दिव्य विभूति की तरह मान-सम्मान प्राप्त था। वे जब कभी कोटड़ी महाराजश्री के दर्शनार्थ आते, सारा श्रावक समुदाय उनकी अगवानी के लिए पलकपांवड़े बिछा देता। उन्हें सभी बाबूजी ही कहते।

इस बीच उदयपुर से वकील साहब के पिताश्री ने तार भेजा कि वकालात की परीक्षा पास करने पर अब यहां आ जाओ तथा वकालात प्रारम्भ कर दो। यह पढ़ बाबूजी ने उन्हें अपने परिवार के साथ रहने और माता-पिता की सेवा करने उदयपुर भेज दिया। चपलोत साहब ने यहां आकर वकालात का धंधा प्रारम्भ किया पर धर्म के संगत-संस्कार उनके जीवन में इतने गहरे पैठ गये कि ग्यारह वर्ष तक वे वकालात तो करते रहे पर उसमें किसी तरह की उपलब्धि अर्जित नहीं कर सके।

यह भी दुर्योग ही रहा कि उदयपुर आने के एक वर्ष में ही उन्हें माता-पिता, बड़े भाई और स्वयं के सुपुत्र की असामयिक मृत्यु का दंश झेलना पड़ा। यह उनके जीवन का अप्रत्याशित असह्य आघात रहा जिसकी उन्हें अंश मात्र कल्पना नहीं थी। काल की गति को कोई बांध नहीं पाता। कल क्या होगा, इसे भी कोई नहीं जान पाता। ऐसा अक्सर होता है जब व्यक्ति सोचता कुछ है, घटता कुछ और ही है।

उन्हीं दिनों भीनासर में साधु सम्मेलन का आयोजन हुआ सो वकील साहब उसमें पहुंचे तब बाबूजी से भेंट हुई। उन्होंने कहा कि इधर आजाओ। बाबूजी की जो देन उनके प्रति रही उसी से उनके जीवन का निर्माण हुआ। यह उपकार वे जीवनभर नहीं भूल सके। फलस्वरूप अधिक कुछ नहीं सोच चपलोत साहब वहां आ गये। यहां वे 1956 से 1969 तक रहे।

बाबूजी ने उन्हें मार्च 1970 में पूज्य नानालालजी महाराज उदयपुर पधारे तब सन्तों को प्राकृत व्याकरण, आगम, जैन न्याय तथा धर्मशास्त्र पढ़ाने भेजा। यहां सुरेशकुमार सांड शिक्षा सोसायटी से उन्हें गुरु-दक्षिणा के रूप में सम्मान-निधि से सम्मानित किया। सन् 1975 की 06 अक्टूबर को जब देशनोक में अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ का अधिवेशन हुआ तो चपलोत साहब का बहुमान कर जो प्रशस्तिपत्र दिया गया, वह उनके जीवन की अनुपम यादगार ही सिद्ध हुआ। मेरे बहुत आग्रह पर बड़े संकोच के साथ वकील साहब ने सम्मानपत्र दिखाया जिससे पता चलता है कि पूरे समाज की उनके प्रति कितनी उच्च भावनाएं, आदर तथा लोकप्रियता थी। उस समय जो कुछ मैं नोट कर पाया उसकी झलक यहां प्रस्तुत है-

- पंडितरत्न विद्यादानी श्री रोशनलालजी चपलोत
- आपकी विद्वता एवं अध्यापन-निष्ठा समाज के सभी सन्तों में प्रकाशमान है।
- आपकी सुदीर्घ साधना तथा सेवा-भावना द्वारा सन्त-सती वर्ग की प्रतिभा के विकास में असाधारण प्रेरणा प्राप्त हुई है।
- आपके उद्यत व्यक्तित्व एवं कृतित्व से समाज सदा लाभान्वित हुआ है।
- आपकी गुण गरिमा से समाज को विशेष गौरव एवं सम्मान प्राप्त हुआ है।
- आपका आदर्श जीवन सदैव एक प्रकाशस्तंभ के रूप में समाज का मार्गदर्शन करता रहेगा।

उदयपुर में चपलोत साहब का निवास घण्टाघर के पास जड़ियों की ओल में था। उन्हीं के पीछे भण्डारियों की घाटी पर तब मैं रहता था। बीकानेर में तब उनके साथ उनकी पत्नी जिन्हें हम 'काकीसा' तथा बिटिया सुशीला थी जिसे सभी 'बेबी' कहते थे। चपलोत साहब का निधन सन् 1980 में हुआ।

उदयपुर में बेबी मुझे यदाकदा मिलती रहती है। उसने बताया कि उसकी तीन बेटियों में दो मेडिकल डॉक्टर तथा एक प्रिंसिपल है। एक भाई गोविन्द भी डॉक्टर बने। दूसरा भाई यशवंत उदयपुर में सेटल है। किसी ने ठीक ही कहा है-

सज्जन चरित दिखाते जिससे कर सकते हम पथ उज्ज्वल।
जाते समय जगत में छोड़ें अपने चरण चिन्ह निर्मल।।

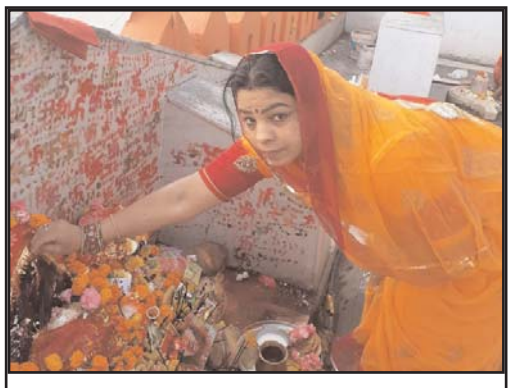

उदयपुर में गणेश टेकरी पर शीतला सप्तमी को चेचक की माता शीतला की ठंडी पूजा करतीं पीलिया परिधान में रंजना। लोकगीत से अरदास- 'रतन जतन कर राखजो ए मांय।'

खतरनाक है, यह अल्पसंख्यकवाद

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

इधर सर्वोच्च न्यायालय में एक बड़ी मजेदार याचिका पेश की गई है, अश्विनी उपाध्याय के द्वारा! उन्होंने अपनी याचिका में तर्क दिया है कि अल्पसंख्यकता के नाम पर कई राज्यों में बड़े पैमाने पर ठगी चल रही है।

जिन राज्यों में जो लोग बहुसंख्यक हैं, वे यह कहते हैं कि हम लोग अखिल भारतीय स्तर पर अल्पसंख्यक हैं, इसलिए हमें अल्पसंख्यकों की सब सुविधाएं अपने राज्य में भी मिलनी चाहिए। जैसे जम्मू-कश्मीर में मुसलमान बहुसंख्यक हैं लेकिन उन्हें इसके बावजूद वहां अल्पसंख्यकों की सारी सुविधाएं मिलती हैं लेकिन जम्मू-कश्मीर के हिन्दुओं, यहूदियों और बहाइयों को, जो वास्तव में वहां अल्पसंख्यक हैं, उन्हें अल्पसंख्यकों की कोई सुविधा नहीं मिलती।

यही हाल मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल, लक्षद्वीप, मणिपुर और पंजाब का है। इन राज्यों में रहनेवाले धार्मिक बहुसंख्यकों को भी अल्पसंख्यक मानकर सारी विशेष सुविधाएं दी जाती हैं। उपाध्याय ने अपनी याचिका में अदालत से मांग की है कि अल्पसंख्यकता का निर्णय राज्यों के स्तर पर भी होना चाहिए ताकि वहां के अल्पसंख्यकों को भी न्याय मिले। तर्क की दृष्टि से उपाध्याय बिल्कुल ठीक हैं लेकिन बेहतर तो यह हो कि देश में से मजहब, भाषा और जाति के आधार पर समूहों को बांटा न जाए। राष्ट्रीय एकता के लिए यह बेहद जरुरी है।

दूसरे शब्दों में संख्या के आधार पर बना यह विशेष दर्जा राज्य स्तरों पर तो खत्म होना ही चाहिए। यह भी जरुरी है कि इसे अखिल भारतीय स्तर पर भी खत्म किया जाए। सन् 1947 में भारत का बंटवारा इसी मजहबी संख्यावाद के कारण हुआ और अब देश के चुनाव और राजनीति का आधार यही जातीय संख्यावाद बन गया है। यही क्रम आगे चलता रहा तो 1947 में भारत के सिर्फ दो टुकड़े हुए थे लेकिन 2047 में भारत के सौ टुकड़े भी हो सकते हैं।

यह बेहद खतरनाक प्रक्रिया है। महाराष्ट्र और कर्नाटक ने संविधान के ढीले-ढाले प्रावधानों का सहारा लेकर मज़हबी और भाषाई आधार पर अपने नागरिकों को बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक वर्गों में बांट रखा है। हमारी केन्द्र सरकार ने उक्त याचिका का समर्थन करते हुए संवैधानिक प्रावधान का हवाला भी दे दिया है। संविधान में ऐसा करने की छूट है लेकिन किसी भी राष्ट्रवादी सरकार को हिम्मत करनी चाहिए कि वह इस राष्ट्रभंजक संवैधानिक प्रावधान को खत्म करवाए और देश के सभी नागरिकों को उनकी जरुरत के मुताबिक (जाति और धर्म के आधार पर नहीं) आवश्यक विशेष सुविधाएं अवश्य दी जाएं।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 अप्रेल 2022

सम्पादकीय

तीज तेवारां बावड़ी ले डूबी गणगौर

भारतीय समाज में महिला की भूमिका सदैव ही प्रमुखा के रूप में रही है। गृहस्थ जीवन के केन्द्र में रहकर उसने धुरी का शक्ति रूप ग्रहण किया है। मनुष्य की तुलना में उसकी क्षमता कई गुना अधिक बेजोड़ रही है। इसीलिए देवियों में भी उसकी संख्या अधिक अलौकिक है। नवरात्रा में शक्तिपीठों पर उनकी पूजा-आराधना के कई रूप देखने को मिलेंगे।

पर्व-उत्सवों और व्रतानुष्ठानों में भी महिलाएं अपनी अलग भूमिका लिये हैं। उसके बिना सारे काम-काज फीके और बेमजा लिये रहते हैं। इन सबमें पुरुष की भूमिका मात्र सहायक के रूप में दर्ज रहती है। सारे राग-रंग, संस्कार-सरोकार, गीत-गाळ, नेगचार महिलाजनित रंग रस से सराबोर मिलते हैं। वही वंशवर्धक और सौलह सिणगार तथा बत्तीस भोजन तैंतीस तरकारियों में स्वाद रूप गुण और कदाचार की प्रयोक्ता बनी रहती है।

भारतीय समाज की यह विशेषता है कि यहां बारहों माह कोई-न-कोई त्यौहार-पर्व-उत्सव मनाया जाता है। महिलाओं के व्रतानुष्ठान ही इतने हैं जिनके लिए कहा जाता है, एक सूप में जितने राई के दाने समा जायें उनसे भी ज्यादा अनगिनत हैं। लेकिन कहावत है, सावनी तीज से त्यौहारों की झड़ी लग जाती है जो गणगौर तक चलती रहती है। गणगौर के बाद इन उत्सवी राग-रंगों पर विराम लग जाता है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का महाप्रयाण

उदयपुर (ह.सं.)। तेरापंथ धर्मसघ की प्रथम चयनित, तीन आचार्यों के काल में अमृत वर्षों से अधिक समय तक संयमी जीवन जाने वाली साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का दिल्ली में महाप्रयाण हो गया। तेरापंथ के इतिहास में पहली बार साध्वीप्रमुखा के रूप में अर्ध शताब्दी तक शासन की सेवा करने के उनके योगदान स्वरूप आचार्य महाश्रमण ने उन्हें 'शासन माता' का अलंकरण प्रदान कर अभिनन्दन ग्रंथ 'अमृतम्' प्रदान किया।

केशव पथिक नहीं रहे

कपासन (ह.सं.)। कपासन निवासी केशव 'पथिक' (91) गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित रचनाकार थे। उन्होंने आजीवन खादी का पाजामा-कुर्ता-टोपी धारण कर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। उदयपुर में जब चन्द्रेश व्यास ने दैनिक जय राजस्थान प्रारम्भ किया तो प्रतिदिन डॉ. देव कोठारी का 'ठालेराम की डायरी' तथा साप्ताहिक कॉलम डॉ. महेन्द्र भानावत का 'चलते-चलते', डॉ. भगवतीलाल व्यास का 'आईना' तथा केशव 'पथिक' का 'कूंपल' लम्बे समय तक पाठकों की पसंद बना रहा। केशवजी की कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। जय राजस्थान के सम्पादक शैलेष व्यास ने बताया कि उस दौर के पाठक आज भी स्तंभ लेखकों को भूले नहीं हैं।

साध्वी अनोखाकंवर का महाप्रयाण

उदयपुर के तलेसरा कुल की साध्वी श्री अनोखाकंवर (82) का 04 फरवरी को संथारापूर्वक देहत्याग हो गया। वे संथारा काल में अपने वस्त्रों व रजोहरण का प्रतिलेखन भी स्वयं ही करतीं जबकि 40 साध्वीरत्नाएं उनकी सेवा में अहर्निश तत्पर थीं। आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. ने उनके मरण को महोत्सव बताते कहा कि प्रतिपल स्वाध्याय में रत रहने वाली साध्वीश्री सब पर हर पल अपने निश्छल प्रेम व स्नेह की बौछार करती रहती थीं। छोटी-छोटी सतियों में जब तपस्या करने का भाव प्रकट करतीं तो वे उनका आत्मबल बढ़ाती हुई अद्वितीय सम्बल प्रदान करती थीं। जल में कमलवत् उनका जीवन था। अल्पाहारी होने के बावजूद उनमें गजब की स्फूर्ति थीं। **-डॉ. हंसा हिंगड़**

निर्मोही साहित्य अकादेमी पुरस्कार से समादृत

अनेक सम्मानों एवं पुरस्कारों से लकदक साहित्य श्रीनिधि मीठेश 'निर्मोही' को उनकी राजस्थानी काव्य कृति 'मुगती' के लिये साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा अध्यक्ष डॉ. चन्द्रशेखर कंबार ने शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये की राशि भेंट कर समादृत किया।

निर्मोही राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। उन्होंने राजस्थानी त्रैमासिक 'आगूंच' का वर्षों तक संपादन किया है। उनकी कविताओं और कहानियों का रूसी तथा अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। पाठ्यक्रमों में उनकी राजस्थानी एवं हिन्दी कविताएं और कहानियां शामिल रही हैं। **- आलोक रावल**

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन में माटी की सुगंध

शब्द रंजन मार्च का ई-अंक मिल गया। इस अंक में 'गाल गुलाल लगायें कैसे, किस विध किसके संग?' में मुझे भी सम्मिलित किया है। आजकल ऐसा स्नेहिल श्रम करने वाले महानुभाव कहां हैं? मैं मां, मातृभूमि, मेवाड़ और उदयपुर से अपने आपको जुड़ा हुआ पाकर प्रमुदित होता हूं। शब्द रंजन में अपनी माटी की सुगंध होने से इसे विशेष दिलचस्पी से पढ़ता हूं। **- डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई**

मेवाड़ धरा के गौरव से भरपूर

साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' के माध्यम से वाट्सएप पर प्रथम बार 'शब्द रंजन' का पूरा अंक पढ़ा। डॉ. भानावत को मैं विगत चालीस वर्षों से पढ़ता आ रहा हूं। वे लोककलाओं एवं मेवाड़ के गौरवशाली लेखक हैं। इस अंक में तुलसी-मीरा के मिलन, गवरी तथा अन्य सभी लेखों की विस्तृत जानकारी है। करज रो करयावर की विवशता तथा डॉ. देवदत्त शर्मा का लेख 'गम गई ईडूणी' बहुत रोचक है। मैं भी मेवाड़ का ही हूं अत: मेवाड़ धरा के गौरव से भरपूर यह अंक बहुत अच्छा लगा।

-देवदत्त शर्मा, अजमेर

को-ब्रैंडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च

उदयपुर (वि.। एचडीएफसी बैंक और शॉपर्स स्टॉप ने को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड की एक नई रेंज लॉन्च करने की घोषणा की। क्रेडिट कार्ड एचडीएफसी बैंक के ग्राहकों के साथ-साथ शॉपर्स स्टॉप के 8 मिलियन से अधिक 'फर्स्ट सिटीजन' ग्राहकों के लिए उपलब्ध होंगे, जिसका उद्देश्य सुविधाजनक तरीके से खरीदारी का बेहतर अनुभव प्रदान करना है। एचडीएफसी बैंक और शॉपर्स स्टॉप का लक्ष्य इस गठजोड़ के माध्यम से 5 वर्षों में 1 मिलियन से अधिक कार्ड प्राप्त करना है।

क्रेडिट कार्ड दो श्रेणियों में उपलब्ध होंगे, शॉपर्स स्टॉप एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड और शॉपर्स स्टॉप ब्लैक एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड। पहली श्रेणी शॉपर्स स्टॉप एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड है जो शॉपर्स स्टॉप पर निजी लेबल ब्रांडों पर 6 शॉपर्स स्टॉप पॉइंट (एसएसपी) प्रदान करता है, 2 एसएसपी शॉपर्स स्टॉप के अन्य ब्रांडों पर और बाहर (ईंधन और वॉलेट को छोड़कर) बिना किसी कैप के खर्च करता है। ग्राहक खरीदारी करते समय शॉपर्स स्टॉप आउटलेट्स पर अपने पॉइंट रिडीम कर सकते हैं।

संगीत दंगल तालबन्दी

- रामलाल माथुर -

राजस्थान के पूर्व में स्थित भरतपुर, अलवर तथा सवाई माधोपुर जिलों के रहने वालों को छोड़कर अन्य लोग सम्भवत: समूची, रैणी, कठूमर, वढ़ेर, लिली, बिचगांवा व धौलागढ़ जैसी छोटी जगहों के नाम से भी परिचित नहीं होंगे किन्तु क्या कोई विश्वास करेगा कि इस क्षेत्र में कोई साढ़ा तीन सौ वर्ष पूर्व से संगीत की एक अभूतपूर्व लोक-गायन परम्परा चली आ रही है।

तालबन्दी अकेली एक ऐसी विधा है जिसका गायन विशुद्ध रागमय है किन्तु प्रस्तुतीकरण लोकपरक। पूर्वांचल के अन्य कलारूप हेला का ख्याल व कन्हैया आदि की भांति इस विधा को भी 'संगीत दंगल' का दर्जा प्राप्त है। इसका प्रचलित नाम तालबन्दी गायकी है।

पुराने लोग इस तालबन्दी गायकी को ही 'ढप्पाली राग' कहते हैं। उनका कहना है कि पहले इसका गायन ढप वादन से आरम्भ होता था। कुछ का यह भी कहना है कि उन्होंने इसमें एक महिला कलाकार को हाथ से ताल देते देखा है। गायन के साथ-साथ ताल देना शास्त्रीय संगीत, विशेष रूप से दक्षिणात्य संगीत का अनिवार्य हिस्सा है।

कहा जाता है कि मुगल सम्राट औरंगजेब को संगीत विद्या से कोई लगाव नहीं था सो कुछ संगीतज्ञों ने उसकी नजरों से दूर रहकर छिपे तौर पर इसे जीवित रखने का बीड़ा उठाया। उनमें से कुछ राजस्थान के पूर्वी अंचल में आ गए। वहां उन्होंने साधु वेश में रहकर संगीत की एक नई धारा को जन्म दिया। इसमें बादशाह की संगीत के प्रति अरूचि के लिए रोष भी प्रगट किया गया। आज भी इस गायकी की अदायगी में गायन 'सम' पर आने से पूर्व, मुट्ठी बान्धकर, वीर रस की मुद्रा में नक्कारा वादक की ओर मुंह करके 'सम' का संकेत देता है तो ऐसा लगता है मानो वह ताल ठोककर संगीत विरोधी शक्तियों को चुनौती दे रहा है। ताल ठोकने व ताल देने की प्रमुखता के कारण इसका नामकरण 'तालबन्दी' हुआ भी सुनने में आता है।

तालबन्दी के कार्यक्रम पहले मेलों में आयोजित होते थे। इनमें धोलागढ़ का मेला प्रसिद्ध था। इसमें अनेक दल भाग लेते थे। उनमें प्रतियोगिता भी होती थी। एक दल के राग व साहित्य का जवाब दूसरा दल तुरन्त देता था। इस अखाड़ेबाजी के कारण इसका नाम संगीत दंगलों में शुमार हुआ। दंगल विजेता दल को नारियल व साफा भेंट किया जाता था।

आजकल तालबन्दी का बम वादन टामक या धौंसा से होता है। यह वादन सुदूर ग्रामवासियों के लिए सूचना देने का प्रतीक भी है। इसके बाद गायक दल हारमोनियम, मंजीरा तथा ढोलक की संगत पर अपना गायन देवी स्तुति से आरम्भ करता है जिसमें दंगल में अपनी विजय के लिए प्रार्थना होती है। उदाहरण के लिए-

मेरी जै अंबे जगदम्बे महारानी।
त्राहि-त्राहि में शरण तिहारी/
कृपा करो मुझ पर महतारी
शिंभु सिंह चढ़ रण बलिहारी/
कर दो विजय हमारी।। मेरी।।

तथा

लज्जा राखो या दंगल में भवानी आदि।

इसके बाद मुख्य गायक अपने दल के साथियों के साथ किसी राग विशेष में एक रचना प्रस्तुत करता है। गायन के विस्तार के रूप में यह दल लम्बी व क्लिष्ट तानें तो नहीं लेता किन्तु साधारण लयकारी दिखाता है, साथ ही स्थाई व अन्तरे को दुगुनी लय में गाकर सीधी तिहाइयां भी लेता है। हाथ से ताल की खाली-भरी भी दिखाई जाती है। गायन के बीच बम-वादन बन्द रहता है किन्तु वादक सजग रहकर मुख्य गायक के संकेत विशेष की प्रतीक्षा करता है। संकेत मिलने पर बम-वादक एक विशिष्ट व आकर्षक लयनुमा तिहाई लेकर सम पर आता है। इस प्रकार गायक व बम-वादक के एक साथ सम पर आकर मिलने से श्रोताओं को विशेष आनन्द की अनुभूति होती है।

गायन के दौरान गायक-दर्शकों के बीच घूमकर एक चक्कर लगाता है। इस समय हारमोनियम व ढोलक वादक अपने वाद्यों को भी गले में लटका कर साथ चलते हैं। इसमें शास्त्रीय संगीत की महफिलों के विपरीत दंगल का कलाकार अपने को समाज का हिस्सा समझता है। गायन के श्रोता भी गायन का हिस्सा ही होते हैं।

तालबन्दी गायकी पेशेवर गायकों की श्रेणी में नहीं आती है। इसके गायक-वादक मध्यम वर्गीय लोग होते। कार्यक्रम के अवसर पर दल के कलाकार अपने खर्चे से निर्धारित स्थान पर पहुंच जाते हैं। वे पारिश्रमिक भी नहीं लेते। दंगल प्राय: रातभर चलते हैं और इनमें विवाद रहित स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होती है।

कार्यक्रम में गायक-नेता परम्परागत रागों में अपना गायन प्रस्तुत करते हैं किन्तु गायन-शैली में जड़ता नहीं होती। लेखक को इस सम्बन्ध में एक बार विचित्र अनुभव हुआ। गायक राग 'विहाग' में एक रचना प्रस्तुत कर रहा था कि अचानक बिना ताल व रस भंग किये एक पुरानी लोकप्रिय धुन में बन्धा गीत गाने लगा- 'दूर हटो ए पाकिस्तानी, ये कश्मीर हमारा है।' इसे दो-तीन बार दोहराने के बाद वह पुन: विहाग की स्थाई पर आ गया। यह सब इतना स्वाभाविक रूप से हुआ कि किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। शास्त्रीय संगीत में तो ऐसे किसी प्रयोग की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

अपना देश अपनी संस्कृति

ज्योतिषण गंगाबाई

मेवाड़ की पहली महिला ज्योतिषी के रूप में गंगाबाई आमेटा का नाम उस काल के जनजीवन में बड़ा प्रचलित रहा। यह महाराणा सज्जनसिंह का काल था। गंगाबाई के पिता का नाम ब्रजलाल भारद्वाज था। मां हीराबाई ने सात पुत्रों को जन्म दिया किन्तु सभी अकाल मृत्यु के शिकार हुए। उनके निधन के बाद गंगाबाई का विवाह भंवरलाल व्यास के साथ हुआ। यह बालविवाह था। इस समय गंगाबाई की उम्र मात्र सात वर्ष थी। भंवरलाल भी अधिक उम्र नहीं ले पाए। बारह वर्ष की उम्र में ही कुए में डूब जाने से उनका प्राणान्त होगया।

भंवरलाल के सुपौत्र श्यामसुंदर व्यास ने 15 जून 1981 को बताया कि तब विधवा का जीवन अंधकारमय था। सारे सुखों से वंचित बालविधवा का जीवन तो और कठिन तथा दुसाध्य था। गंगाबाई को उसके पिता ने ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड की शिक्षा में पारंगत कर दिया। ससुरालवालों ने भी गंगाबाई को बड़ा संबल दिया। उसे पढ़ाई के लिए शंभुरत्न पाठशाला में भेज दिया। यह पाठशाला लार्ड ईडन द्वारा स्थापित की गई थी।

गंगाबाई के श्वसुर रत्नेश्वर महाराणा शंभुसिंह के गुरु थे। पाठशाला शंभुसिंह के नाम पर प्रारंभ की जानी थी किंतु महाराणा ने इसे अपने गुरु के नाम पर खोलना चाहा। अंत में महाराणा और उनके गुरु; दोनों के नाम से उसका नाम शंभुरत्न रखा गया। यह जगदीश चौक में स्थापित हुई जो अब भी बालिका विद्यालय के नाम से अस्तित्व में है। यहां हायर सैकण्डरी तक की पढ़ाई होती है।

महाराणा शंभुसिंह

गंगाबाई अपने पीहर हाथीपोल स्थित खेजड़ीवाली गवाड़ी में रहकर ज्योतिष का काम करने लगी। उनके पिताश्री की धरोहर के रूप में यजमानवृत्ति का काम गंगाबाई ने संभाल लिया। गंगाबाई वास्तुशास्त्र में भी दखल रखती थी। उन्होंने जाना कि जिस मकान पर मंदिर की ध्वजा की छाया पड़ती हो उसकी वंशवृद्धि नहीं होकर क्षरण ही होता है। उनके मकान के पास ही कुमावतों का मंदिर था। उन्हें पता चल गया कि उनके भाइयों के निधन के पीछे ध्वजा की छांह ही प्रबल थी। श्यामसुंदर व्यास से स्वयं गंगाबाई ने इस बात की चर्चा की।

उदयपुर के तीज के चौक, गांछीवाड़ा में स्थित सोलंकियों के मंदिर की प्रतिष्ठा कराई जहां उनका नाम शिलोकीर्ण है। यों विधवा का हिन्दू विवाह की चंवरियों में जाना वर्जित रहता है किंतु गंगाबाई ने कई विवाह करवाये। कई समस्याग्रस्त परिवारों के लिए गंगाबाई का बड़ा सहारा रहा। किसी का नामा-जोड़ा नहीं मिलने पर गंगाबाई नाम बदलकर नई कुंडली बनाती। ऐसे डांगी, फूलमाली तथा सोलंकी समाज में उन्होंने कई परिवार बसाये जो अत्यंत सुखी जीवन व्यतीत करते पाये गये।

गंगाबाई मुहूर्त देखने और भविष्य कथन करने में माहिर थी। एकबार मीठालाल दशोरा की दस तोले की तुस्सी गुम गई। गंगाबाई से पूछना कराई तो बताया कि कच्चे मकानों की लींपाई-पुताई कराने पर डेढ़ माह के भीतर तुस्सी मिल जायेगी। यही हुआ। लींपाई के दौरान चूहे के बिल में एक फूंदा दिखाई दिया। उसे बाहर निकाला गया तो उससे जुड़ी तुस्सी हाथ लगगई। इस पर गंगाबाई को दशोराजी ने एक तोला सोना भेंट करना चाहा पर गंगाबाई ने लेने से मना कर दिया।

श्यामसुंदर व्यास ने बताया कि सन् 1957 में 83 वर्ष की उम्र में गंगाबाई का निधन हुआ। गंगाबाई काले रंग का पोमचा तथा लाल-काली बगतरी पहनती थी। उनके हाथों में चांदी के बल्ये तथा वलय से बनी चूड़ी रहती। एकबार महाराणा सज्जनसिंह ने गंगाबाई से पूछवाया कि शिकार पर जाने के लिए वे कौनसे दरवाजे से प्रस्थान करें। गंगाबाई ने अपने श्वसुर के माध्यम टीप लिख भेजी कि नया दंडपोल दरवाजा जो बंद है, उस रास्ते से पधारना शुभ रहेगा। महाराणा ने ऐसा ही किया और बाद में मनचाही शिकार करने पर गंगाबाई को याद किया। **- म. भा.**

गंगाबाई के श्वसुर रत्नेश्वर महाराणा शंभुसिंह के गुरु थे। पाठशाला शंभुसिंह के नाम पर प्रारंभ की जानी थी किंतु महाराणा ने इसे अपने गुरु के नाम पर खोलना चाहा। अंत में महाराणा और उनके गुरु ; दोनों के नाम से उसका नाम शंभुरत्न रखा गया। यह जगदीश चौक में स्थापित हुई जो अब भी बालिका विद्यालय के नाम से अस्तित्व में है। एकबार महाराणा सज्जनसिंह ने गंगाबाई से पूछवाया कि शिकार पर जाने के लिए वे कौनसे दरवाजे से प्रस्थान करें। गंगाबाई ने अपने श्वसुर के माध्यम टीप लिख भेजी कि नया दंडपोल दरवाजा जो बंद है, उस रास्ते से पधारना शुभ रहेगा। महाराणा ने ऐसा ही किया और बाद में मनचाही शिकार करने पर गंगाबाई को याद किया।

राजस्थान के दुर्ग : ऐतिहासिक महत्व एवं शिल्प सौंदर्य पुस्तक विमोचित

उदयपुर (वि.)। संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट तथा जिला कलक्टर ताराचंद मीणा ने सूचना केंद्र में आयोजित समारोह में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक पन्नालाल मेघवाल द्वारा लिखित 'राजस्थान के दुर्ग ऐतिहासिक महत्व एवं शिल्प सौंदर्य' पुस्तक का विमोचन किया।

इस अवसर पर संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने कहा कि लेखक पन्नालाल मेघवाल ने इस पुस्तक में प्रसिद्ध 39 दुर्गों की स्थापत्य एवं ऐतिहासिक महत्व की जानकारी उपलब्ध कराकर सराहनीय कार्य किया है। श्री भट्ट ने लेखक से बदनोर जैसे अन्य दुर्गों की जानकारी उपलब्ध कराने का सुझाव दिया तो लेखक ने बताया कि उन्होंने बदनोर सहित अन्य बारह दुर्गों पर लेखन कार्य पूरा कर लिया है जिसकी जानकारी पुस्तक के द्वितीय अंक में प्रकाशित की जाएगी।

जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने कहा कि राजस्थान के दुर्ग ऐतिहासिक महत्व एवं शिल्प सौंदर्य पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। इस अवसर पर जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा, नगर नियोजन विभाग के पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक एस. के. श्रीमाली, खान एवं भूविज्ञान विभाग के अतिरिक्त निदेशक एस. डी. डोडिया तथा इतिहासकार महेश शर्मा उपस्थित थे।

राजस्थान पुलिस की 240 जांबाज महिलाएं सम्मानित

उदयपुर (वि.)। नारी शक्ति और नारी सशक्तिकरण की दिशा में मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य और राज्यपाल सलाहकार लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने लेडी पेट्रोल टीम उदयपुर तथा सुरक्षा सखी सहयोगी राजस्थान पुलिस की 240 जांबाज महिलाओं का सिटी पैलेस में प्रशस्ति-पत्र, शॉल और उपरणा प्रदान कर सम्मान किया। मेवाड़ ने उदयपुर रेंज आईजी हिंगलाजदान और पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार के हाथों लेडी पेट्रोल टीम की महिलाओं को मोबाइल से कनेक्ट होने वाले हाईटेक हेलमेट प्रदान किए। वहीं महिला पुलिस को महिला स्वच्छता प्रबंधन के तहत इको फ्रेंडली 5000 सेनेटरी पेड दिए, जिनको महिला पुलिस टीम जरूरतमंद बच्चियों और महिलाओं में वितरण करेगी।

इस अवसर पर लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि राजस्थान पुलिस की इन जांबाज महिलाओं ने 'त्याग, अनुशासन और बलिदान नारी है सबसे महान' की पंक्ति को अपनी श्रेष्ठ सेवाओं से चरितार्थ किया है। ये कर्मठ महिलाएं खुद के परिवार के साथ-साथ दूसरों के परिवारों को सुरक्षा और संबल प्रदान करने का काम पूरी ताकत के साथ कर रही हैं।

आईजी हिंगलाजदान ने कहा कि महाराणा प्रताप के वंशज लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ द्वारा राजस्थान पुलिस की लेडी पेट्रोल टीम और सुरक्षा सखी की महिलाओं को सम्मानित करने से महिलाओं को और भी निष्ठा के साथ कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। इससे पूर्व आईजी हिंगलाजदान, एडिशनल एसपी अंजना सुखवाल, डिप्टी चेतना भाटी, घंटाघर थानाधिकारी श्यामसिंह का अभिनंदन किया गया।

फ्रैंडी की उदयपुर में परिसेवा शुरू

उदयपुर (ह.सं)। सामुदायिक समूह खरीद मंच फ्रैंडी ने राजस्थान में अपने प्रवेश की घोषणा उदयपुर से की जिसमें 2000 से अधिक घरेलू उद्यमियों को नियुक्त करने की योजना है। उदयपुर में फ्रैंडी वितरक श्रीमती मोनिका पंवार और भूपेंद्र पंवार ने एक सॉफ्ट लॉन्च की मेजबानी की, जहां 100 से अधिक संभावित फ्रैंडी पार्टनर्स को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर आरती चौबे और वीनू नाकुम मौजूद रहे।

ग्रोथ टीम फ्रैंडी, वीनू नाकुम ने कहा कि फ्रैंडी के ग्राहक मोबाइल ऐप या फ्रैंडी पार्टनर को ऑर्डर दे सकते हैं। ग्राहक के सभी ऑर्डर फ्रैंडी पार्टनर के माध्यम से डीलिवर किए जाते हैं। यह हाई टच मॉडल 95 प्रतिशत भारतीय ग्राहकों के लिए काम करता है। फ्रैंडी ईकॉमर्स नहीं बल्कि वीकॉमर्स हैं जहां विश्वास कायम करने के लिए सामुदायिक भरोसे का लाभ उठाते हैं। इसके अलावा, फ्रैंडी का ऐप हिंदी इंटरफेस में उपलब्ध है। फ्रैंडी महिलाओं को अंशकालिक काम करने, अपने समुदायों की सेवा करने और आय अर्जित करने का अवसर प्रदान करता है। फ्रैंडी पार्टनर्स 5000-10000 रुपये महीने भर में कमा सकते हैं। उनकी कमाई चर्चा के साथ बढ़ती जाती है।

फ्रैंडी के सह-संस्थापक गौरव विश्वकर्मा ने कहा कि महिलाओं का माइक्रो बिजनेस राजस्थान में एक आकर्षण रहा है। हमें यकीन है कि हमारे फ्रैंडी पार्टनर्स को प्रशिक्षण देकर हम राजस्थान में भी अपने 'मैं से हम' आंदोलन को और मजबूत करने में सक्षम होंगे। उन्होंने कहा कि हमें अपने नए भागीदारों से सकारात्मक प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है जो अपने दोस्तों और परिवारों को 'मैं से हम' आंदोलन में शामिल होने के लिए कह रहे हैं।

दोस्त उदयपुर की श्रीमती मोनिका पंवार ने कहा कि फ्रैंडी के वीकॉमर्स मॉडल ने मुझे तुरंत आकर्षित किया, और अपने पति के साथ हमने उदयपुर के लिए फ्रैंडी दोस्त फ्रेंचाइजी बनने का फैसला किया, जो घरेलू उद्यमियों को अपने समुदायों की सेवा करने और आय अर्जित करने का एक शानदार अवसर प्रदान करता है।

बाजार / समाचार

दुग्ध संबल योजना का लाभ सभी किसानों को देने की मांग

उदयपुर (वि.)। मुख्यमंत्री दुग्ध संबल योजना के तहत हाल ही में घोषित प्रोत्साहन राशि से नाराजगी जाहिर करते हुए राजस्थान के 22 जिलों से 1.10 लाख से अधिक दूध उत्पादक कंपनियों से जुड़े किसानों ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर इस योजना का लाभ राज्य के सभी दूध उत्पादकों को दिलाने की मांग की है।

हाल ही में राज्य सरकार द्वारा पेश किये गए कृषि बजट में मुख्यमंत्री दुग्ध संबल योजना के तहत सरकार ने दुग्ध किसानों के लिए सब्सिडी 2 रूपये से बढ़ाकर 5 रूपये प्रति लीटर कर दी थी। सब्सिडी बढ़ने से 5 लाख डेयरी किसानों को लाभ होना चाहिए, जिसके तहत 550 करोड़ रूपये का अतिरिक्त आउटले तय किया गया है। वास्तविकता यह है कि राज्य के कुल 95 फीसदी डेयरी किसान इस योजना के फायदों से वंचित हैं। ऐसे में किसानों की मांग है कि सब्सिडी का फायदा सभी डेयरी किसानों तक पहुंचे, ताकि कृषि एवं पशुपालन सेक्टर को प्रोत्साहन दिया जा सके।

डेयरी किसान संजू ने कहा कि ज़्यादातर डेयरी किसान इस बात से परेशान हैं कि इस सब्सिडी का फायदा राज्य के डेयरी संघ से जुड़े चुनिदां किसानों को ही मिल रहा है। हम सब्सिडी को बढ़ाकर 5 रूपये प्रति लीटर करने के कदम का स्वागत करते हैं, किंतु इस योजना का लाभ राज्य के सभी किसानों को एक समान रूप से मिलना चाहिए। नेहा चिपा ने कहा कि राज्य में 1 करोड़ से अधिक लोग डेयरी कृषि में सक्रिय हैं और 5 रूपये प्रति लीटर की सब्सिडी का फायदा 5 लाख किसानों को मिल रहा है। ऐसे में तकरीबन 95 फीसदी डेयरी किसान इस लाभ से वंचित हैं। राजस्थान देश का दूसरा सबसे बड़ा दूध उत्पादक राज्य है, जहां डेयरी कृषि के लिए विविध संरचनाएं हैं। राज्य की सहकारी समितियों के अलावा, दूध उत्पादक ऐसी अन्य संस्थाओं से भी जुड़े हैं जिन्हें दूध उत्पादक कंपनियां कहा जाता है। पायस, उजाला, सखी और आशा 4 मुख्य दूध उत्पादक कंपनियां हैं जिन्हें 22 ज़िलों के किसान दूध की आपूर्ति देते हैं। इन किसानों ने मुख्यमंत्री और राज्य सरकार को पत्र लिख कर आग्रह किया है कि राज्य के सभी दूध उत्पादकों को निष्पक्ष रूप से सब्सिडी मिले।

ग्वालियर की जीवाजी यूनिवर्सिटी की टीम को राज्यपाल ने ट्राफी सौंपी

उदयपुर (सुजस)। माननीय राज्यपाल कलराज मिश्र ने महाराणा प्रताप खेलगांव में मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय की मेजबानी में आयोजित ऑल इंडिया इंटर जोनल हॉकी (महिला) चैंपियनशिप में जीवाजी यूनिवर्सिटी ग्वालियर और आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के बीच आयोजित फाईनल मैच को देखा और विजेता दल को ट्राफी प्रदान की।

राज्यपाल मिश्र ने विजेता दल को अपनी तरफ से एक लाख तथा उप विजेता को 75 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया। इस दौरान राज्यपाल ने चैंपियनशिप की स्मारिका का विमोचन भी किया। समारोह में विशिष्ट अतिथि त्रिनिदाद एवं टोबेगो के उच्चायुक्त डॉ. रॉजर गोपाल, उदयपुर पूर्व राजपरिवार सदस्य लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ थे जबकि अध्यक्षता सुखाड़िया विवि के कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने की।

समारोह में राज्यपाल ने मुख्य प्रशिक्षक अर्जुन अवार्डी ओलम्पियन अशोक ध्यानचन्द को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। प्रतियोगिता का प्रतिवेदन विश्वविद्यालय क्रीड़ा मण्डल के अध्यक्ष प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत ने प्रस्तुत किया। प्रो. अमेरिका सिंह ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका अभिनंदन किया। समारोह में जिला कलक्टर ताराचंद मीणा, जिला पुलिस अधीक्षक मनोजकुमार, एडीएम सिटी अशोककुमार सहित प्रशासनिक अधिकारी, सुखाड़िया विवि के प्रोफेसर्स एवं अन्य प्रतिनिधि, जिला खेल अधिकारी शकील हुसैन सहित खेल प्रशिक्षक, दर्शकगण मौजूद रहे। संचालन कुलदीपसिंह झाला ने किया।

इंदिरा आईवीएफ एक लाख आईवीएफ को सफल बनाने वाली पहली स्पेशियाल्टी चेन बनी

उदयपुर (वि.)। इंदिरा आईवीएफ एक लाख आईवीएफ को सफल बनाने वाली पहली स्पेशियाल्टी चेन बन गई है जिसने यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य के महत्व पर जोर देते हुए 10 वर्षों की अवधि में यह उपलब्धि हासिल की है। इंदिरा आईवीएफ ने देशभर में 700 फिजिकल कैम्प्स के जरिए 60,000 कपल्स को जागरूक करने का काम किया है। कोविड -19 के दौरान भी डिजिटल एकीकरण और व्यक्तिगत परामर्श के साथ प्रयास जारी रहे। इसके 107 केंद्रों में से 50 प्रतिशत से अधिक केंद्र टियर 2 और टियर 3 स्थानों में स्थित हैं, जिन्होंने इनफर्टिलिटी के चिकित्सा उपचार के बारे में जागरूकता पैदा करके भारी संख्या में लोगों को सशक्त बनाया।

इंदिरा आईवीएफ समूह के संस्थापक डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि हमारी सफलता की पहली कहानी तब घटित हुई जब वर्ष 2011 में नव्या नामक एक बच्ची इस दुनिया में आई। सह-संस्थापक, डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि पिछले साल हम अपनी प्रगति और महत्वाकांक्षा में तेजी लाने के लिए एक मजबूत टीम लाए। इंदिरा आईवीएफ में अपने कार्यों को संभालने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को नियुक्त करने पर ध्यान दिया है। सह-संस्थापक नितिज मुर्डिया ने कहा कि हमारे एक लाख की उपलब्धि को हासिल करने में उन्नत तकनीकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हमने सर्वोत्तम कोटि के क्लोज्ड वर्किंग चैम्बर्स, इलेक्ट्रॉनिक विटनेसिंग, माइक्रोफ्लुइडिक्स, एडवांस्ड इनक्यूबेटर्स और लैबकेयर अलार्म सिस्टम को प्रयोग में लाया है, जिन्होंने निम्नतम संभव साइकल्स की संख्या में कपल्स को गर्भ धारण में मदद की है।

फैशन स्टोर ट्रेंड्स सलूंबर में शुरू

उदयपुर (वि.)। रिलायंस रिटेल की स्पेशलिटी चेन, ट्रेंड्स ने सलूम्बर में अपना नया स्टोर लांच किया है। ट्रेंड्स ने भारत में मेट्रो, मिनी मेट्रो, टियर 1, 2 शहरों और छोटे-छोटे कस्बों में ग्राहकों तक अपनी पहुंच और संपर्क को मजबूत कर फैशन को घर-घर पहुंचा रहा है। सलूम्बर में ट्रेंड्स स्टोर को आधुनिक शैली से बनाया गया है। यहां महिलाओं, पुरुषों, बच्चों के कपड़े व फैशन का सामान किफ़ायती दामों पर उपलब्ध होगा। छह हजार वर्गफुट में फैला यह स्टोर, सलूम्बर का पहला स्टोर है जहां बेहतर क्वालिटी के उत्पाद मिलेंगे। लांच पर खास ऑफर दिया जा रहा है जिसमें 3499 की ख़रीदारी पर 199 का आकर्षक उपहार तथा, 2999 की ख़रीदारी पर 3000 तक का कूपन मुफ्त मिलेगा।

जिंक फुटबॉल ने जीता शीर्ष पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता-हिन्दुस्तान जिंक की सीएसआर पहल जिंक फुटबॉल को सीएसआर जर्नल द्वारा आयोजित 'सीएसआर जर्नल एक्सीलेंस अवार्ड्स 2021' में बेहतरीन काम और शानदार उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। मुंबई में आयोजित पुरस्कार समारोह में कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी स्पेस में देश के कुछ शीर्ष गणमान्य व्यक्तियों ने हिस्सा लिया। जिंक की सीएसआर हेड, अनुपम निधी को उनके जिंक फुटबॉल के प्रतिनिधियों के साथ इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वेदांता फुटबॉल के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल ने कहा कि हिन्दुस्तान जिंक ने 2018 में सामाजिक और आर्थिक उत्थान, युवा विकास, सामुदायिक विकास, महिला सशक्तिकरण और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने के लिए जिंक फुटबॉल के माध्यम से भारतीय फुटबॉल के विकास में अपना योगदान देने का प्रयास शुरू किया था। यह कार्यक्रम देश में अपनी तरह की एक अनूठी पहल है, जिसके केंद्र में उदयपुर के पास जावर में स्थित एक आवासीय अकादमी है, जिसमें विश्वस्तरीय सुविधाएं हैं और यह देश का पहला प्रौद्योगिकी आधारित फुटबॉल ट्रेनिंग केंद्र है।

श्री अग्रवाल ने कहा कि इस पुरस्कार को पाकर हम वास्तव में सम्मानित महसूस कर रहे हैं और देश में फुटबॉल के विकास की दिशा में हमारे प्रयासों और कड़ी मेहनत को स्वीकार करने के लिए मैं सीएसआर जर्नल टीम को धन्यवाद देता हूं। वेदांता लिमिटेड ने पिछले कुछ वर्षों में खेलों के विकास की दिशा में एक और सराहनीय कदम उठाया है। इस पुरस्कार ने निश्चित रूप से जमीनी स्तर पर खिलाड़ियों के समग्र विकास के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में हमें और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है।

'फोक म्यूजिक फॉर अ स्वस्थ इंडिया' लॉन्च

उदयपुर (वि.)। डेटॉल बनेगा स्वस्थ इंडिया (डीबीएसआई) ने भारत का पहला हाईजीन म्यूजिक एल्बम 'फोक म्यूजिक फॉर अ स्वस्थ इंडिया' लॉन्च करने के लिए राजस्थान सरकार, शिक्षा विभाग (प्राथमिक और माध्यमिक), संस्कृत शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व एवं संग्रहालय के साथ साझेदारी की है। डीबीएसआई रईस खान प्रोजेक्ट के सहयोग से राजस्थानी लोकसंगीत के माध्यम से स्वच्छता का संदेश फैलाने के लिए लोक संगीत की शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है।

शिक्षामंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला ने जयपुर के जवाहर कला केंद्र आर्ट सेंटर में डेटॉल एक्स रईस खान प्रोजेक्ट का म्यूजिक एल्बम लॉन्च किया और कहा कि डेटॉल रईस खान प्रोजेक्ट फोक म्यूजिक स्वच्छता का संदेश फैलाने का एक अनूठा तरीका है। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की बेहतरी के लिए राजस्थान की समृद्ध संगीत विरासत को इतना बड़ा योगदान देते हुए देखना वास्तव में गर्व की बात है।

रवि भटनागर, डायरेक्टर, एक्सटर्नल अफेयर्स एवं पार्टनरशिप, एसओए, रेकिट ने कहा कि लोकसंगीत की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। राजस्थान की समृद्ध संस्कृति इसकी धुनों में गहराई से समाई हुई है। ऐसे में रईस खान प्रोजेक्ट के साथ यह साझेदारी देशभर में व्यवहारिक परिवर्तन लाने के हमारे प्रयास की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह राज्य लोक कलाकारों, कठपुतली और संगीतकारों का केंद्र है। डेटॉल एक्स रईस खान प्रोजेक्ट लोकसंगीत के माध्यम से राजस्थानी परंपराओं और संस्कृति को प्रदर्शित करते हुए स्वच्छता के संदेशों को पीढ़ियों तक प्रासंगिक बनाए रखने का प्रयास है।

गौरन में कौनसी.....

(पृष्ठ एक का शेष)

गरासिया बांस की खपच्चियों और छोटी-पतली डालियों की सहायता से गणगौर और ईसर बनाते हैं। मुंह की जगह मुंडी यानी मुखोटा लगाते हैं। ईसर

को धोती-कुर्ता व फेंटा पहनाया जाता है जबकि गणगौर को घाघरा,लुगड़ा, चोली पहनाई जाती है। इनको आम, नीम, महुआ, खजूर, पलाश आदि के पत्तों तथा कच्चे फलों की मालाओं से सजाया जाता है।

ऐसी ही गणगौर बणजारों की विवाह योग्य युवतियां बनाती हैं। घास-फूस, फल-फूल तथा डाल-कामड़ी से दिनभर गणगौर-ईसर बनाकर उन्हें घाघरा, लुगड़ी, कांचली-अंगरखी, धोती-पगड़ी तथा चांदी के विभिन्न आभूषणों से सजाती हैं और संध्या को अपने सिर पर लिए गाती-नाचती जुलूस निकालती हैं।

चित्तौड़ जिले के बणजारों का खेड़ा गांव में विवाहातुर बालिकाएं भी ऐसी ही घास फूस पत्ते तथा टहनियों की सहायता से बड़ी कलात्मक गणगौर और ईसर बनाती देखी। संध्या को खेत से जुलूस के रूप में नाचती गाती गणगौर अपने गांव ले जाती हैं तब जो गीत गाती हैं। उनमें कहा जाता है कि सहेलियों! इस वर्ष तो हिलमिल कर मौजमस्ती से गणगौर मना लें। अगले वर्ष पता नहीं क्या संयोग बैठे कि सब साथ मिलकर यह उत्सव न मना पायें। जब विवाह सूत्र में बंध जाएंगी तो मिलना संभव नहीं होगा।

घूमर नृत्य :

राजस्थान में जयपुर, कोटा, बूंदी, जैसलमेर, उदयपुर, बीकानेर की घूमर बड़ी नामी रही है। राजपरिवारों की घूमर अपने विशिष्ट लहजे पहनावे तथा ठसक के कारण अपना अलग वैशिष्ट्य लिए होती है। इसका मुख्य वाद्य ढोल है। सहायक वाद्य के रूप में बांकिया भी बजाया जाता है।

घूमर नाचने वाली महिलाएं विविध भांति की घूमरें लेती हैं। एक प्रकार तो वह जिसमें गोलाकार घूमती हुई महिलाएं अपने हाथों से तालियां बजाती रहती हैं। दूसरा प्रकार डंडों वाली घूमर का है। इसमें नाचने वाली अपने ही हाथों के डंडे आपस में टकरात हुई नाचती हैं और दोनों ओर की पासवाली के डंडों से अपने डंडे मिलाती हुई खेलती हैं। तीसरे प्रकार की घूमर में डंडों का प्रयोग नहीं होता। नाचते समय अपने हाथों को उठाती हुई ऊंगलियों द्वारा नाना भाव व्यक्त करती हैं। इन घूमरों में अलग-अलग गीतों का प्रयोग होता है।

गणगौर पूजने वाली लड़कियां और महिलाएं घूमर नाचने के लिए घेरा बनाकर खड़ी हो जाती हैं। वे झुकती हुई, अपने हाथों से ताली बजाती हुई नृत्य करती हैं। कभी-कभी युगल रूप में एक दूसरे का कैंचीनुमा हाथ पकड़, अपने पांवों को एक दूसरे से समीप लाकर खींचे हुए हाथों से शरीर को धनुषाकार देती हुई चकरी लेती हैं और सम पर पुन: पूर्व स्थिति ग्रहण करती हैं। घूमर का कोई सा प्रकार हो, गोलाकार घूमना जरूरी होता है।

कवि पद्माकर द्वारा गणगौर दर्शन :

राजस्थान का गणगौर का त्यौहार अन्य प्रान्तों में भी बड़ा लोकप्रिय हुआ। इसे देखने बाहर से भी कई विशिष्ट लोगों का उदयपुर आना-जाना होता रहा। महाराणा भीमसिंह के समय महाकवि पद्माकर गणगौर की सवारी देखने आये। इस सवारी का उनके दिल पर बड़ा अमिट प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप उन्होंने दो पदों की रचना की।

एक पद की यह पंक्ति- 'गौरन में कौनसी हमारी गणगौर है', आज भी साहित्य की अमर थाती बनी हुई है। मेवाड़ में गणगौर की तरह महिला को भी गणगौर का सम्बोधन दिया जाता है। पुरूष अपनी सहधर्मिणी को भी गाणगौर कह कर पुकारता है। इस सम्मानसूचक संबोधन से कवि पद्माकर बड़े चकित और उतने ही प्रभावित हुए इसीलिए उन्होंने उक्त पंक्ति में त्यौहार वाली गणगौर के साथ-साथ घरवाली गणगौर का अनुप्रासयुक्त उल्लेख किया।

हिम्मतसिंह चौहान अध्यक्ष, भरतसिंह सचिव निर्वाचित

उदयपुर (ह. सं.)। जिला जिम्नास्टिक्स संघ उदयपुर के पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्य के चुनाव निर्वाचन अधिकारी विक्रमसिंह चंदेल, राजस्थान राज्य जिम्नास्टिक्स संघ के अध्यक्ष चैनसिंह राठौड़ (पर्यवेक्षक) तथा जिला ओलिंपिक संघ उदयपुर के पर्यवेक्षक बलवीर सिंह की उपस्थिति में संपन्न हुए। इसमें सर्वसम्मति से हिम्मतसिंह चौहान को पुन: अध्यक्ष, भरतसिंह सचिव तथा नरेन्द्रसिंह चौहान कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसके अलावा उपाध्यक्ष पद पर भरतसिंह राठौड़, अनूप अधिकारी, हेमंत शर्मा, विनयदीपसिंह कुशवाहा, सह सचिव पद पर संजय कोठारी, राजेश पालीवाल, कमलेश जैन, अनिल देवपुरा तथा राजकुमार मेनारिया, लोकेन्द्रसिंह चुण्डावत, कर्नीपल सिंह, महेंद्रसिंह भाटी, भूपेंद्रपाल सिंह, वेदपाल सिंह, राजेंद्रसिंह चौहान, सुरेश कंडारिया, सुश्री गर्विता अमिटा, विकास निगम, जितेन्द्र अग्रवाल, निरंजन सिंह, श्रीमती सुमन चौबीसा, सुधीर उदयवाल, अशोक जैन, भूपेश याग्निक, संजय बंसल, विनय खत्री एवं नरेन्द्र पटवा सदस्य बनाये गये।

हिम्मतसिंह चौहान भरतसिंह नरेन्द्रसिंह चौहान

जिला जिम्नास्टिक्स संघ उदयपुर की नव-निर्वाचित कार्यकरिणी ने राजस्थान ऑलंपिक संघ के अध्यक्ष अजीतसिंह राठौड़ व राजस्थान राज्य जिम्नास्टिक्स संघ के अध्यक्ष चैनसिंह राठौड़ का साफा पहनाकर स्वागत किया और यह विश्वास दिलाया कि नई कार्यकारिणी उदयपुर जिम्नास्टिक्स को नई ऊंचाइयां प्रदान करेंगी।

विशाल बावा द्वारा तुलसी क्यारे को नमन

पुष्टिमार्गीय संप्रदाय में तुलसी दल के बिना यह सेवा अधूरी मानी जाती है क्योंकि प्रभु बिना तुलसी के भोग नहीं अरोगते हैं। इसलिए वल्लभ कुल परिवार के सम्पूर्ण जीवनकाल में तुलसीपत्र का विशेष महत्त्व व मान्यता है।

वल्लभ कुल में तुलसी क्यारे की स्थापना को लेकर बड़ी अद्‌भुत रीत एवं संस्कार है। श्रीजी प्रभु के प्राकट्यस्थल जतीपुरा वल्लभ कुल का मूल स्थल माना जाता है वहीं श्री गिर्राजजी की तलहटी में श्री मुखारविंद के समीप ही तुलसी क्यारा स्थित है। इस स्थल की विशेषता है कि जब वल्लभ कुल परिवार में किसी सदस्य का श्रीजी शरण या लीला गौलोक वास हो जाता है तो उनके फूल (अस्थियां) सूक्ष्म रूप में यहां की पवित्र रज में पधरा दिए जाते हैं एवं वल्लभ कुल के पूर्वजों की स्मृति में उस पवित्र तुलसी रज में सुन्दर तुलसी क्यारे का निर्माण कर तुलसीजी के पौधे का रोपण कर दिया जाता है। यहां स्थित तुलसी क्यारे में गिरधारीलालजी महाराज, गोविंदलालजी महाराज, विजयलक्ष्मी बहूजी, राजीवजी महाराज, महालक्ष्मी बहूजी के पवित्र तुलसी क्यारे स्थित हैं।

हाल ही में विशाल बावा ने ब्रज यात्रा के दौरान तुलसी क्यारे पधारकर पूर्वजों को तुलसी क्यारे में जल अर्पण कर

श्रद्धा सुमन अर्पित किए। विशाल बावा ने जतीपुरा में मुखारविंद, मदन मोहनजी मंदिर, श्री गुसाईंजी की बैठक, श्रीमद् गोकुल में स्थित राजा ठाकुर मंदिर एवं महाप्रभुजी की ब्रज में स्थित बैठकों में पधारकर प्रभु से प्रार्थना की कि कोरोना काल के बाद सभी कुशल मंगल हों एवं श्रीजी प्रभु सम्पूर्ण वल्लभ कुल की रक्षा करें।

- गिरीश व्यास

हेड इंजरी अवेयरनेस पर हेल्थ टॉक और बाइक रैली

उदयपुर (ह. सं.)। पारस जेके हॉस्पिटल उदयपुर में हेड सेफ्टी के प्रति जागरूकता फ़ैलाने के उद्देश्य से 26 एवं 27 मार्च को जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। पहले दिन हेड इंजरी अवेयरनेस प्रोग्राम में पारस जेके हॉस्पिटल के न्यूरो साइंस डिपार्टमेंट के डॉ. अमितेन्दु शेखर, डॉ. अजीतसिंह, डॉ. तरुण माथुर तथा डॉ. मनीष कुलश्रेष्ठ ने हेल्थ टॉक में हेड सेफ्टी के प्रति लोगों को जागरूक किया और हेड इंजरी, सर्वाइवर और कुछ मरीजों से हेड सेफ्टी के बारे में चर्चा कर उनके अनुभव साझा किए। इसी के साथ डॉ. अमितेन्दु शेखर और डॉ. अजीतसिंह ने हेड इंजरी केसेस, पोस्ट रिकवरी और उनकी डिफिकल्टीज के बारे में समझाते हुए हेलमेट की महत्वपूर्णता पर प्रकाश डाला। दूसरे दिन हेडइंजरी अवेयरनेस बाइक रैली निकाली गई। इसमें 34 रॉयल एनफील्ड, वोयेज मोटर्स, उदयपुर सेक्टर 3 सेवाश्रम शोरूम बाइक राइडर्स निदेशक जतिन गांधी और 86 दूसरे प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रैली फतहसागर से शुरू होकर चेतक सर्कल, हिरणमगरी सेक्टर 3, दुर्गानर्सरी, सौ फीट रोड़ होते हुए पारस जेके हॉस्पिटल पहुंची।

सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान में उदयपुर जिले के चिकित्सा विभाग के बेहतर प्रदर्शन पर राज्य स्तर पर सम्मान मिला है।

स्वास्थ्य भवन जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में उदयपुर सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी को

विभाग द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्य हेतु स्वास्थ्य सचिव आशुतोष ए. टी. पेडणेकर तथा मिशन निदेशक एनएचएम डॉ. जितेंद्र सोनी ने विशिष्ट अवार्ड से सम्मानित किया। डॉ. खराड़ी ने बताया कि राज्य स्तर से मिले इस सम्मान के लिए जिले की पूरी मेडिकल टीम बधाई की पात्र है। उसकी अथक मेहनत एवं लगन का ही परिणाम है कि जिले के कार्य को राज्य स्तर पर सराहा जा रहा है।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (8)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

भांड : देवगढ़ के

वे स्वांग जिनका प्रदर्शन शौकिया न होकर व्यावसायिक दृष्टिकोण लिये होता है, भांड भड़ैती के रूप में जाने जाते हैं। इनमें बहुरूपिया मुख्य है। यह वह व्यक्ति होता है जो बहुरूपी स्वांग धारण कर अपनी आजीविका उपार्जन करता है। मेवाड़ की ओर इसे भांड कहते हैं। कालान्तर में यह बहुरूपिया इतना लोकप्रिय बना कि आगे जाकर इनकी एक जाति ही बन गई। हर प्रकार की नकलबाजी तथा कलाबाजी करने में ये लोग सिद्ध होते हैं।

महाराणा सज्जनसिंह और जोधा भांड :

ठग विद्या में ये लोग बड़े प्रवीण होते हैं। इस दृष्टि से देवगढ़ के भांड, जिन्हें वैद भी कहते हैं, बड़े प्रसिद्ध कहे जाते हैं। अपनी पिछली खोजयात्रा में जब हम देवगढ़ गये तो वहां के वयोवृद्ध मास्टर उगड़सिंहजी मेहता ने भांडों से संबंधित मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह का रोचक वृतान्त सुनाया जो यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

एकबार महाराणा ने अपने मुसाहिबों से सुना कि देवगढ़ के भांड अपनी ठग विद्या में बड़े पहुंचे हुए होते हैं। बिना कोई भेद-भनक दिये अच्छों-अच्छों को ठगलेना उनके बांये हाथ का खेल समझा जाता है। इस पर महाराणा

ने विनोद में कहा- 'मुझे भी कोई ठगकर बताये तो जानूं।' देवगढ़ के ठगों को महाराणा की बात का पता लगा। उनके लिए यह अग्नि-परीक्षा का अवसर था। यदि महाराणा को ठगकर उन्होंने अपना कमाल नहीं बताया तो उनको कोई नहीं पूछेगा और रहीसही उनकी प्रतिष्ठा भी खाक में मिल जायेगी। उनके लिए यह मानापमान का प्रश्न बन गया। वे अवसर की टोह में लगे रहे।

समय देख कर एक दिन जोधा नामक भांड साधु वेश में अपने दो चेलों सहित उदयपुर आया और राजमहल के पास अपना डेरा जमाया। लम्बी जटा, हष्टपुष्ट डीलडौल, कांतिमान चेहरा, प्रभावशाली व्यक्तित्व, ज्ञान, योग, तंत्र एवं ज्योतिष का भारी जानकार। शहर में जहां देखो वहां उसी की चर्चा। बड़े-बड़े विद्वानों तथा ज्ञानकर्मियों की भीड़, सत्संग, समागम। बैठकों पर बैठकों का तांता।

भांग गांजेवालों के भी भाग्योदय। धूणी पर बैठने वालों की जन्मजन्मान्तर की साध पूर्ण हुई। राख में जहां हाथ डालो वहीं सोने की टिकिया हाथ लगती। जनता में आम चर्चा- 'यह तो साधु वेश में नारायण का अवतार है। ऐसे भाग्य कहाँ जो इनके दर्शन।'

महाराणा के पास भी साधु की चमत्कारिक बातें पहुंचीं। उन्होंने साधु-दर्शन की इच्छा व्यक्त की। फलत: एकदिन शुभ मुहूर्त में उनका शाही पदार्पण हुआ। महाराणा साधु के सत्संग से बड़े प्रभावित हुए। साधु ने उन्हें अशीर्वचन में कहा-'पूर्व जन्म के यश:प्रताप से आपको महाराणा की पदवी प्राप्त हुई है।

धन, धान्य, रिद्धि समृद्धि आदि किसी की भी आपके पास कमी नहीं है। अब आपको अपना अधिकाधिक समय हरि सुमिरण में व्यतीत करना चाहिए।

महाराणा महलों में पधार गये परन्तु साधु बड़े-बड़े मनकों की जो माला फेर रहा था उसमें उनकी दृष्टि रम गई। उन्होंने साधुजी से वही माला मंगवाने के लिए अपने मुसाहिब को भेजा। साधु ने- 'यह माला केवल लाख की

है', कह कर वह माला दे दी।' महाराणा ने साधु के पास उसका मूल्य भिजवा दिया।

प्रतिदिन चर्या के रूप में महाराणा माला फेरते और भक्ति-भजन करते। होते-होते सर्दी के दिन आये। जब कड़ाके की सर्दी पड़ने लगी तो महाराणा अंगीठी के पास बैठकर माला फेरने लगे। एक दिन अंगीठी की तेज आग के कारण लाख के मणिये पिघल गये। महाराणा को बड़ा अचरज हुआ। उन्हें पता नहीं था कि यह माला लाख की है।

उन्होंने अपने मुसाहिबों को बुलाकर माला की बात कह सुनाई। मुसाहिबों ने पता लगाकर महाराणा को खबर दी कि- 'हुजूर, वह साधु नहीं था जिसने यह माला दी और न यह माला ही लाख रुपये की थी। यह तो लाख की बनी हुई थी इसलिए गर्मी के कारण इसके मनके पिघल गये। वह साधु भी हुजूर और कोई नहीं, देवगढ़ का जोधा भांड था।' महाराणा ने अपनी पिछली कही बात याद की और जोधा को इस करिश्मे के लिए शाबाशी कहलाई।

- क्रमश :

लोकनाट्यों के प्रस्तुतिकरण के लिए एक ही रंगमंच

हमारी संस्कृति की प्राचीनावस्था में हमारे पास विशाल मन्दिर भी नहीं होते थे। मन्दिर रहे होंगे जिनमें सिर्फ गर्भगृह होता होगा और उसके सामने बड़ा खुला मैदान। माता के मन्दिर का जो खुला मैदान था वही 'चाचर चौक' बना है और वहीं ये लोकनाट्य प्रस्तुत होते थे और वेश की भजवणी होती थी।

हमारे देश में लोकनाट्यों के प्रस्तुतिकरण के लिए सिर्फ एक ही रंगमंच था और वह था खुला मैदान और उसकी वर्तुलाकार खुली जगह। मंच के चारों ओर प्रेक्षक बैठते हैं और दूर-दूर से पैदल चलकर उस लोकनाट्य को प्रस्तुत करने वाले आते हैं। रंगमंच के नाम पर उनके पास कुछ नहीं होता सिवाय धूल और मिट्टी के।

सिर पर खुला आकाश। चहुंदिश उछलता मानव समुदाय। लाडू बनाते हैं व चूरमा तैयार करते हैं। उनके लिए खाने का थाल वहीं आ जाता है। अंग-चेष्टा से वह लाडू तैयार करने का अभिनय प्रस्तुत करते हैं। रेखा खींचकर थाल बनाते हैं। अभिनय से लाडू तैयार कर-करके थाल में डालते हैं। ऐसे लोकनाट्य के प्रस्तुतिकरण में प्रतीकों एवं इंगित का बहुत प्रयोग होता है।

लोकनाट्य में शाब्दिक अभिनय से ज्यादा इंगित अभिनय होता है। 'बाबाजी व चेलकी के वेश' में बाबाजी खुले आकाश के नीचे तल पर सारा ही मन्दिर खड़ा कर देते हैं और उनका सारा वेश ही शाब्दिक कम और प्रतीक-इंगितयुक्त अधिक होता है।

रंगमंच की तुलना में लोकनाट्य-कलाकार के पास कम-से-कम रंगमंचीय सामग्री होती है जबकि उसके प्रेक्षकगण संगीत, शब्द, नृत्य, अभिनय आदि सबका आस्वादन करना चाहते हैं। उसी से लोकनाट्य को अत्यधिक दर्शनीय बनाने हेतु वह इंगित, वाचिक और आंगिक अभिनय का सहारा लेता है। इससे लोकनाट्य का प्रस्तुतिकरण सीधा, सादा किन्तु सौन्दर्ययुक्त बन जाता है। रंगमंच के नाम पर उनके पास केवल सपाट भूमि ही होती है और कुछ नहीं।

लोकनाट्यों को मंचस्थ करने वाले लोग बहुत कल्पनाशील होते हैं। गुजरात में 'जसमा-ओडणी' का वेश है। जसमा तालाब का उत्खनन कार्य करती है। वह कैसे इसे जतायेगी ? हाथ से ऐसा इंगित करके, ऐसी चेष्टा से यह बताते हैं। गुजरात के राजवी सिद्धराज आते हैं। तालाब बिल्कुल शुष्क तालाब और बहुत से ओड तालाब के उत्खनन कार्य में रत हैं। ऐसी तस्वीर जेहन में बना कर वे लोग 'जसमा-ओडणी' का खेल दिखाते हैं। लगता है कि समस्त विश्व में प्राचीनकाल में लोकनाट्य की प्रस्तुतिकरण की यही रीति रही थी।

लोकनाट्य का प्रस्तुतिकरण होने को होता है तब प्रारम्भ में लम्बे-लम्बे भूंगल से बढ़िया घोष होता है, वह यह बताने के लिए कि गांव में लोकनाट्यकार नट दल का आगमन हुआ है और रात को वह खेल करेगा। रंगमंच होता है खुला चौगान। जहां बहुत लोग इकट्ठे होते हैं। नाट्य सारी ही रात चलता रहता है। लोकनाट्य में प्रेक्षकगण खुद लोकनाट्य के अंग बन जाते हैं। लोकनाट्य में प्रॉम्पटर की जरूरत नहीं होती।

'राम-रावण युद्ध' में रावण दशानन नहीं है लेकिन कराल जरूर है। उसका मुकुट घोड़े की दळी के कपड़े की गद्दी जैसा होता है। वह लम्बा गोल होता है और रावण के शीश पर रखकर उसमें पेड़ की छोटी-छोटी टहनियां रख दी जाती हैं। गांजा, अफीम और दारू पीकर वह मस्त और ताकतवर बन जाता है। दोनों हाथों में लोहे की नंगी तलवारें थमा दी जाती हैं और सारा गांव ही उसका रंगमंच बन जाता है।

राम गली-गली में घूमते हैं। रावण उनकी तलाश में गांव की गली-गली छानता है। जब दोनों का मिलन होता है तब युद्ध हो जाता है। गांव के कुछ लोग पेड़ों पर चढ़ जाते हैं। कुछ मकानों की छत पर और जब दोनों का युद्ध होता है तब सारी प्रेक्षक-मण्डली तीव्र और तीक्ष्ण आवाज देती है। घण्टे-दो-घण्टे तक राम-रावण युद्ध ही चलता रहता है। प्रेक्षकगण राम की सेना बनकर राम को प्रोत्साहित कर-कर उसमें रम जाते हैं। यह प्रस्तुतिकरण अद्वितीय है।

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक नाटक का प्रस्तुतिकरण अलग-अलग होता है और उसमें सिर्फ नट का ही हिस्सा नहीं होता, और लोग भी इसमें सम्मिलित रहते हैं। दल के नायक का भी योग होता है। साजिन्दों का भी हिस्सा रहता है। इस प्रमाण से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि लोकनाट्यों के प्रस्तुतिकरण की प्रक्रिया मात्र एक-दो की नहीं, सारे लोक-समुदाय की है। यह सम्मिलित प्रयास होता है जिसमें न केवल कलाकारों, दल के नायक तथा साजिन्दों का ही योग रहता बल्कि दर्शक समुदाय का भी हिस्सा रहता है जो अपनी टीका-टिप्पणियों से तथा गाने आदि में साथ देकर कलाकारों को प्रोत्साहित करता रहता है।

- डॉ. पुष्कर चंदरवाकर

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।